॥ अर्हं नमः ॥

आत्मकथा
ADVENTURE SERIES

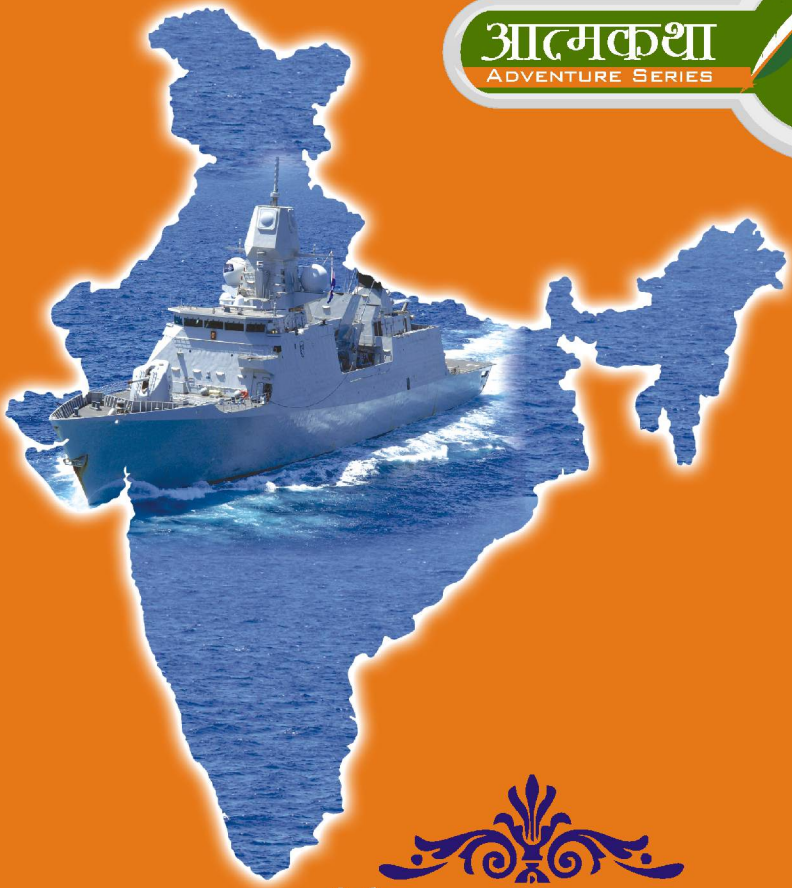

वंदे मातरम्!
वंदे शासनम्!

युगप्रधानाचार्यसम प.पू.चन्द्रशेखर वि.म.सा.

समर्पण

उन सभी सैनिको को, जिन्होने खुद
के जान की परवा किए बिना,
देश की परवा की....

उन सभी शहीदों को, जिन्होने देश
को जान के आगे रखकर खुद को देश
के लिए न्योछावर कर दिया...

उन सभी शासन शहीदों को, जिन्होने
शासनाप्रभाजना के पाप से बचने
के लिए खुद के प्राणों की आहूति दी...

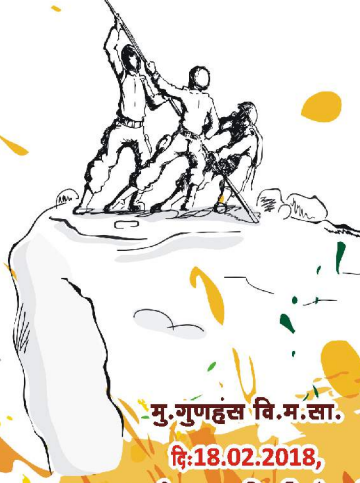

उन सभी सुभटो को
करोडो सलाम...!!!

मु.गुणहंस वि.म.सा.
दि:18.02.2018,
नार्थ टाऊन, बिन्नी, चेन्नई

तत्व TWILIGHT SERIES

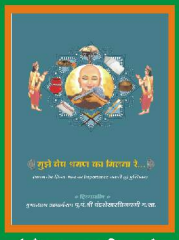

मुझे वैद्य श्रमण का मिलना रे...

अमृतवेल

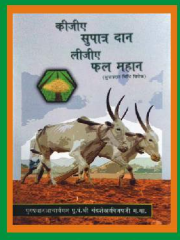

सुपात्रदान

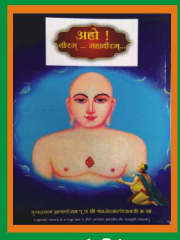

अहोवीरं

दिव्य आशीर्वाद

सच्चारित्र चुडामणि कर्म साहित्य निष्णांत सिद्धांतमहोदधि
पू.आ. श्री प्रेमसूरीश्वरजी म.सा. के विनेय
युगप्रधानाचार्यसम शासन प्रभावक गुरुदेव प.पू.श्री चन्द्रशेखर विजयजी म.सा.

* निश्रादात्ता *

सिद्धांतदिवाकर गच्छाधिपति आ.श्री जयघोषसूरीश्वरजी म.सा.
सरलस्वभावी प.पू.आ.श्री हंसकीर्तिसूरीश्वरजी म.सा.

लेखक

मुनिराज श्री गुणहंसविजयजी म.सा.

Copies - 2,000

* प्रकाशक *

कमल प्रकाशन ट्रस्ट
102-ए, चन्दनबाला कोम्पलेक्स, आनंद नगर,
पोस्ट ओफिस के सामने, झवेरा, पालडी, अहमदाबाद - 7.

* प्राप्ति स्थल *

नरेश जैन
373, Mint Street, Rajendra Complex,
(Near Mahashakthi Hotel)
Chennai - 600 079. Ph: 9841067888

मनोज जैन
Shree Adinath Enterprises
7, Perumal Mudali Street,
Sowcrapet, Chennai - 600 079.
Ph: 9840398344

पीयुष जैन
Sri Divyam
122, Anna Pillai Street,
Sowcrapet, Chennai - 600 079.
Ph: 9884232891

Design and Printed by:

Divyam
imagination alive
Chennai. Ph : 044-49580318
9884232891/8148836497

प्रस्तावना

अर्हं नमः

महोपाध्याय यशोविजयजी महाराजाने जैनत्व की सज्झाय में स्पष्ट कहा है कि

'जैन' ऐसा नाम धारण करने से सच्चे जैन नहि बनते,

'जैन' का वेश धारण करने से सच्चे जैन नहि बनते,

'जैन' वो हीं है, जिसके पास कोई एक छोटा भी गुण है।

सच्चे जैन बनने के लिए जरूर है सद्गुरू का संग।

उपमिति ग्रन्थ में यह ही बताया है कि सद्गुरू पापी संसारी आत्मा को सब से पहले यह ही प्रतिज्ञा देते है।

* सद्गुरू के संपर्क में रहेना।
* हर रोज एकबार उपाश्रय में आना।

यह पुस्तक पढने के बाद आपको लगेगा कि

यह प्रतिज्ञा कितनी आवश्यक है।

युगप्रधानाचार्यसम पूज्य गुरुदेव
पंन्यासप्रवर श्री चन्द्रशेखर विजयजी म.सा. के शिष्य
मु.गुणहंस वि
दि: 13.03.2018,चेन्नई (गुजरातीवाडी)

''मत्थऐण वंदामि म.सा.!'' आवाज सुनते ही मेरी पेन अटक गई। नजरो को उपर करके देखा तो सामने व्हीलचेयर पर ४५ के आसपास वाली उम्र की एक बहन दिखे और उनके पीछे सौम्य मुखाकृतिवाले ३३ वर्ष की उम्र के एक युवक दिखे।

उस युवक के मुख का तेज अच्छे अच्छो को उस पर प्रेमभाव प्रगट करने को मजबूर कर दे वैसा था, और मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। कुछ अजीब प्रकार के भाव उस युवक के मुख पर तैरते हुए नजर आ रहे थे।

मुझे मौन देख वह बहन फिर एक बार 'मत्थएण वंदामि' बोले। मुझे विचारों में खोया हुआ जान कर मुझे जगाने की चेष्टा की और मैं जागृत हुआ।

''धर्मलाभ.....'' मैंने जवाब दिया।

देखने से लगा की बहन सुखी परिवार से है, शिक्षित है, शहरी है.... पर उन बहन ने ना तो हाथ जोडे और ना ही मस्तक झुकाया... मात्र वे बात ही कर रहे थे। शरीर की दुसरी सभी क्रियाएँ बंध थी। मैंने अनुमान लगाया कि *'व्हीलचेयर में आए है तो जरुर ही किसी रोग के भोग बने होंगे।'*

छोटी सी उम्र में उनकी ये हालत देखकर मुझे वैराग्य के साथ करुणा भी जागी, पर उनके शब्दो में प्रसन्नता का रणकार था। मुख पर दीनता के कोई भी भाव न थे। मतलब की करुणा जागे वैसा एक भी लक्षण वहाँ नही था।

''बोलो बहन! कैसे आना हुआ?''

''दर्शन करने के लिए... मैं यही ओसवाल गार्डन कुरुक्कपेट

सोसायटी में रहती हुँ। वैसे मैं स्थानकवासी हुँ, पर संतो के दर्शन करने सब जगह जाती हुँ।''

''प्रवचन में आते हो?'' चौमासे का पचास दिन का समय चल रहा था इसलिए मैंने प्रश्न किया।

''नहीं... आ तो सकती हुँ, पर उसमें दो तकलीफे है। मुझे रोगो ने घेर रखा है, इसलिए सुबह शरीर की सारवार में ही काफी ज्यादा समय निकल जाता है। दूसरा यह कि इस तरह व्हीलचेयर पर बैठकर जाहेर में आकर बैठना मुझे पसंद नहीं, शर्म आती है। इतनी छोटी उम्र में इस हालात में लोग मुझे करुणा की दृष्टि से देखते है, ये मुझे पसंद नहीं..... साहेब!''

''क्या हुआ है आपको? गंभीर बीमारी है?''

दर्दभरी हंसी के साथ बहेन बोली, ''हाँ! डोक्टर ने जितना समय मेरी जिंदगी का निश्चित किया था उसे पार करके एक्स्ट्रा तीन साल जी चुकी हुँ। अभी का ये जीवन तो बोनस है। जितना जी सकुं उतना नफा...''

''डर नहीं लगता?''

''नहीं तो... मरना तो है ही ना । फरक तो मात्र पहले या बाद में मरने का है...'' उनके शब्दो में सत्यता के साथ छलकती निर्भयता मुझे स्पर्श कर गई।

''ये पीछे खडे हुए भाई कौन है?'' जिस युवक को देखकर मुझे सहज ही शुभभाव प्रगट हुआ उसके लिए मैंने प्रश्न कर ही लिया।

''ये मेरी सेवा करते है। भारतीय नौका सेना में है। यहाँ कोचीन में जो युद्ध जहाज है, उसमें चीफ इंजीनियर है... हर शनि, रविवार को यहाँ आते है।'' बहन ने बताया।

मुझे आश्चर्य हुआ।

ये युवान कोई सामान्य नागरीक नहीं कहा जा सकता था। वह कोई सामान्य जहाज का इंजीनियर नही था। परंतु दुश्मनों के साथ जब दरियाई युद्ध होता है, तब उसमें काम आते है ऐसे युद्ध जहाज का चीफ इंजीनियर था।

'इन बहन से कैसे संपर्क में आए? और शनि, रविवार को बहन की सेवा कैसे और क्यों करते है?' ऐसे अनेक प्रश्न मन में खडे हुए पर मैं मौन ही रहा।

''इन भाई का नाम क्या है?'' बस इतना ही पूछा।

''मिथिलेश...'' पहलीबार ये भाई बोले।

मुझे उस भाई को एकांत में मिलने का मन हुआ, बहुत सी बाते जानने की इच्छा भी हुई, पर अभी समय नहीं था। इसलिए मैंने कहा ''मिथिलेश भाई कभी शांति से मिलने आ सकोगे? बहुत सी बाते करनी है?''

''जरुर म.सा.! मुझे भी अच्छा लगेगा।''

अचानक... एक विचित्र घटना घटी। उस बहन का मुँह गले के भाग से एक ही झटके में एकदम नीचे की तरफ झुक गया। मैं चौंका... घबराया... मृत्यु के वक्त जिस तरह गरदन झुक जाती है... उससे भी तीव्र गति से गरदन झुक गई थी। मिथिलेशभाई ने धीरे से सीर उंचा किया, स्थिर किया... बहन दर्दभरी आवाज में हस दिए। *'मैं क्या बोलुं?'* सोच ही रहा था उतने में वह बहन ही बोली ''म.सा.! ऐसा तो बारबार होता है। भगवान की भेंट समान बाकी बचे आयुष्य को इसी प्रकार सहन करके पूरा करुंगी...,'' और उस बहन का इशारा होते ही मिथिलेशभाई व्हीलचेयर को वापस ले चले... पर वह मेरे मन में अनेक प्रश्न छोडे जा रहे थे।

*****

''मैं अंदर आ सकता हुँ ?'' नम्रता से भरा हुआ स्वर सुनाई दिया और मिथिलेश भाई दिखाई दिए। उपर के प्रसंग के बाद कितने ही दिनों के बाद का यह दिन था। उन्हे देखकर मैं खुश हुआ। उनके विषय में बहुत जानना था।

''आप आ सकते हो....'' और वे अंदर आए... स्थानकवासी पद्धति द्वारा वंदन किया और मेरे पास बैठे। पता चला कि बहन के परिचय से उन्हे वंदन आदि थोडे जैनाचारो का ख्याल है...

''आप नेवी में हो ना, तो आप वहाँ क्या काम करते हो?'' मैंने सीधी बात शुरु की।

''म.सा.! भारत के पास बडे-बडे कुल १२० युद्ध जहाज है (लगभग यही संख्या वे बोले थे)। उनमें से एक जहाज का चीफ इंजीनियर हुँ, जहाज में इससे संबंधित सारा काम मैं संभालता हुँ। सैनिक जिस तरह से लडते है उस प्रकार से मुझे लडना नहीं होता, पर मुझे इस प्रकार की सारी ट्रैनिंग-तालिम देने में आई है।''

''आपको क्या काम करना होता है?''

''हमारे समुद्र के किनारों को दुश्मनो से सुरक्षित रखने का लगभग वर्ष के ८-१० महिने तो हम समुद्र में जहाज के अंदर ही रहते है।''

''कभी भी युद्ध लडे हो?''

''अेक आधि बार युद्ध लडा हुँ...''

''आप हिन्दी तो अच्छी बोल रहे हो, तो आप तमिलनाडु के तो नहीं लगते...''

''आपने सही अनुमान लगाया। मैं एम.पी. मनसौर शहर का हुँ।

''आप पहले उस बहन को ले आए थे ना! उस बहन के साथ आपका परिचय कैसे हुआ? और उनकी सेवा करने का तुम्हारा उत्साह भी गजब का है। क्या वे आपके कोई सगे संबंधि है?''

''नहीं म.सा.! सगे तो नहीं, पर निर्दोष प्रेम का संबंध जरुर है। बरसो पहले मेरी ड्युटी चेन्नई में लगी थी। ज्यादातर तो जहाज में ही रुकने का होता था। परंतु बीच -बीच में छुट्टियो के दिनों में कहाँ रुकना? थोडे दिनों के लिए इतना दूर मनसौर जाना भी सही नहीं लगता था। इसलिए चेन्नई में ही किसी जगह पर छोटा-सा घर भाडे पर लेने का विचार किया। मैं तो अकेला ही था, इसलिए एक छोटा सा कमरा भी चल जाता। पर चेन्नई में मैं नया था। मुझे इन सारे कामों में पता नही चलता था। किसीने मुझे पान के गल्लेवाले की तरफ इशारा किया, ''इन्हें मिलो ये आपका सारा काम करा देंगे..''

पर हर शनि, रविवार को मेहनत करने पर भी सफलता ना मिली। इस पान के गल्ले के सामने ही इन बहन की दुकान थी। बहन का नाम वीणा बहन! उन्होंने किसी तरह मेरी परिस्थिति जान ली थी। इसलिए जब अगले शनि, रविवार को उस जगह पर छानबीन कर रहा था, तब उन बहन ने मुझे बुलाया और सारी बात की। मेरी परिस्थिति जानी और मुझे कहा, ''हमारे घर में उपर एक रुम खाली ही है, आप चाहो तो वहाँ पेइंग गेस्ट की तरह रह सकते हो...''

मैंने जगह देखी, पसंद आई, बहन का स्वभाव भी अच्छा लगा, किराया भी सामान्य था। मैंने वह जगह किराए पर ले ली।

दो तीन हफ्ते के बाद एक बार जब मैं वहाँ पहुंचा, तब मैंने देखा कि उन वीणा बहन को दूसरे कोई बहन उनके हाथो से खाना खिला रही थी। मुझे अजीब लगा। साथ ही लाइट हुई। आजतक मैंने

उन बहन को हलन चलन करते देखा नहीं था। उनके हाथ उंचे-नीचे होते देखे नही थे। कभी चलते-फिरते भी नही देखा था। मैंने जब भी देखा, तब दुकान की कुर्सी पर ही देखा था। पर आज तक ऐसा कुछ अंदाज ही नहीं आया।

मेरे अंदर दया जागी। मैं उनके पास गया। पहली बार पूछा ''बहन! क्या तकलीफ है?'' तब उनकी बातो पर से ख्याल आया कि मेरे उपर उपकार करने वाले ये वीणा बहन जीवन-मृत्यु का खेल खेल रही हैं।

'डॉक्टर ने तो परलोक की टिकट फाड ही दी है। अभी तो ट्रेन रवाना हो उसी की देरी है।'

उस दिन मेरी आँखो में से आंसु टपक पडे। कुदरत भी कैसा क्रुर मजाक करता है ना?

वीणा बहेन के घर मैंने जैन धर्म से जुडी जानकारीयां प्राप्त की है। वे मेरे उपकारी थे... बस उसके बाद निर्णय किया कि 'जब भी चेन्नई आउंगा, तब उनकी थोडी बहुत सेवा करुंगा।'

''वीणा बहन सुखी है। विवाहीत परिणीत है। संतान भी है... पर मैं अपनी आत्मा की खुशी के लिए ये छोटा सा काम करता हुँ।'' भीगी आँखो के साथ मिथिलेश भाई ने गहरी साँस लेकर बातो को विराम दिया। पर वह अल्प विराम था, पूर्णविराम नही।

''म.सा. बात निकली ही है, तो आपको मेरी जिंदगी की महत्व की घटनाएँ भी कह ही देता हुँ। मैं जन्म से क्षत्रिय हुँ। मेरे नाना-नानी, दादा-दादी वगैरह सब माँसभक्षण करते है। मैंने भी ३१ वर्ष की उम्र तक माँस खाया है! हमारे गाँव में पशुओं की बली तो सामान्य बात है।

मेरे जन्म की खुशी में नानाजी ने एक बकरे की बली चढाई थी। मैं सैनिक बना तो इस खुशी को जाहिर करने के लिए भी एक

बकरे की बली चढी थी। हमारे पास खुशी को जाहिर करने का सबसे हल्का उपाय था, पशुवध! पर हम उसे ही बेहतर उपाय मानते थे। भगवान जाने मेरे कारण ऐसे तो कितने ही पशुओं का वध हुआ होगा, पर उस वक्त तो वो ही अच्छा और सही लगता था। *'हिंसा खराब कही जाती है'* ये तो मैंने कभी समझा ही न था। बचपन में मनसौर में मेरे एक स्थानकवासी मित्र के यहाँ आना जाना था (आज वह सी.ए. है)। वहाँ उसके घर पर कपडे सुखाने के लिए प्लास्टिक की रस्सी बांधी हुई थी।

मैं **Height** बढाने के लिए ऊँचा कुदता और उस रस्सी को स्पर्श करता और हिलाता रहता... उस वक्त मेरे दोस्त की माँ मुझे ऐसे करने से रोकती...

तब मैंने एक बार पूछा था ''मासी! इसमें क्या परेशानी है?'' तब उन्होंने जवाब दिया कि ''इस रस्सी पर मक्खीयाँ आराम करती है। तुं बारबार रस्सी हिलाता है, तो उन्हे तकलीफ होती है, उन्हें शांती से आराम करने दे।''

तब मुझे उनकी बात बहुत ही विचित्र लगी। मैंने घर जाकर मम्मी से कहा भी था कि ''मेरे दोस्त की मम्मी को दिमागी बीमारी है? वह तो कैसी-कैसी बाते करती है? रस्सी पर से मक्खी उडती है, तो भी उन्हें पाप लगता है। और हम तो पशुओ को मारकर उनका माँस खाने मे खुशी मानते है, कैसी मासुम बचपने की दुनिया है?''

सैनिक बनने की इच्छा से घर में संघर्ष करके, आश लेकर मैं शिक्षा के लिए गया। पर पहली बार में ही मैं थक गया। इच्छा मर गई सैनिक बनने की! वेकेशन में घर आया था, तब तय कर लिया था कि *'अभी लश्कर में नही जाऊँगा, दूसरी लाइन देख लुंगा...'*

पर गाँव के लोग तो ये ही समझते थे कि *'हमारे गाँव का*

युवक सैनिक बनने वाला है।' इसलिए ही वे बडी तादाद में स्टेशन पर हार लेकर मेरा स्वागत करने के लिए आ पहुँचे थे।

मेरी चिंता बढ गई। उन सब से सम्मान लेने के बाद लगा कि *'अभी सैनिक ना बना तो मेरी और मेरे परिवार की इज्जत का तमाशा हो जाएगा।'*

और आखिरकार बिना इच्छा के भी फिर से तालीम में जुडा। धीरे-धीरे Set हो गया और फिर नेवी का इन्जीनियर बना...

म.सा.! नेवी में तो माँस-शराब वगैरह की छूट होती है और सस्ते में भी मिलती है। उसमें भी हम तो अधिकतर समुद्र में ही रहते। मैं खुद समुद्र में से अच्छी से अच्छी मछलीयाँ पकडता और खुब मस्ती से उसका भोजन करता। मछलीयों की दुनिया का सबसे श्रेष्ठ मच्छिभोजन मैंने अनेक बार किया है, और जिस टेस्ट के साथ मैंने खाया है, उससे तो मुझे यही लगता है कि '**मेरा आनेवाला भव नरक का ही होगा।**''

मिथिलेश भाई की आँखे ये शब्द बोलते-बोलते पूरी तरह भीग गई थी, *'मुझे दुःख मिलेगा'* वह तो ठीक, पर बिचारे उन जीवों को तो मेरे कारण कितनी सारी घोर पीडा हुई ना?

''तो ये सब तीन साल पहले कैसे छोडा? वीणा बहन ने छुडाया?'' मैंने पूछा। मुझे ये ही लगा कि जवाब 'हा' आएगा। पर मेरे आश्चर्य के बीच अत्यंत ही प्रसन्नतापूर्वक कुछ और ही जवाब उनके पास से सुनने को मिला।

''ना म.सा.! वीणा बहन का मेरे पर उपकार जरुर है, परंतु मुझे माँस छुडवानेवाले वे नही है। वे तो मेरे परमोपकारी **गुरुदेव श्री नवरत्नसागरसूरिजी म.सा. है।**''

''क्या बात करते हो?'' मैं खुश-खुश हो गया। एक महान तपस्वी, संयमी और मेरे भी बचपन के उपकारी ये महापुरुष ही इस

मिथिलेशभाई के तारणहार महात्मा थे।

''हा! म.सा.! दो वर्ष पहले आराधना भवन में उनका चातुर्मास था, तब मनसौर के मेरे एक जैन परिचित ने मुझे बताया था कि, '**तुं जब भी चेन्नई जाए, तब उन महात्मा को खास मिलना...**'

मैंने ये बात ध्यान में रखी, पर इस मुताबिक कोई खास प्रयत्न नही किया। एक बार रात को नौ बजे के आस-पास ATM से पैसे निकालने के लिए शाहुकार पेट जा पहुँचा। घुमते-घुमते बराबर आराधना भवन के सामने जा पहुँचा। अचानक मेरी नजर वहाँ लगे बेनर पर जा पहुँची। पू.आ.भ.का नाम पढा तो मनसौर की सूचना याद आ गई। बेनर में प्रवचन का समय लिखा हुआ था। ''**सुबह 9.15 से 10.15 बजे तक..**''

समय सुबह का था, पर मुझे तो कुछ खबर नही थी। मैं समझा अभी ९.१५ बजे व्याख्यान होगा और पहली बार मैंने आराधना भवन की सीढिया चढी। पर वहाँ व्याख्यान तो था ही नही। मैं असमंजस में पडा। आखिरकार आचार्य भगवंत को वंदन करने पहुँच गया। मेरी पहली मुलाकात थी। म.सा.! वात्सल्य बरसाते हुए प्रेम भरे शब्दो के साथ उन्होंने मेरे साथ बात की। 'मैं कौन हुँ?' 'क्यो आया हुँ?' 'कहाँ से आया हुँ?' आदि सवाल मुझे पूछे....

''एक प्रश्न पूछु भाई? मान लो के आपके पापा की सोने की दुकान है, पर उसमें मिलावटी सोना मिलता है, तो तुम कहाँ से सोना खरीदोगे?'' मेरी सारी बातें सुनने के बाद उन्होंने मुझे प्रश्न पूछा...

मैंने कहा ''सीधी बात है..., यदि शुद्ध सोना चाहिए तो बाजुवाली दुकान और सस्ता सोना चाहिए तो पापा के वहाँ से लुंगा..''

''तो बेटा! तुं ही नक्की कर, तेरा धर्म पशुवध आदि घोर हिंसा को भी धर्म मानता है, तो वह शुद्ध धर्म कैसे कहा जाएगा? और जैन धर्म में तो छोटे-छोटे जीवों को भी बचाने की बात है, तो क्या वह शुद्ध धर्म नही कहाँ जाएगा? अभी तुम नक्की करो की तुम्हे शुद्ध धर्म चाहिए? या अशुद्ध?''

उन्होंने मुझे यह प्रश्न किया और मन में उथल-पुथल मच गई। गहरे चिंतन में उतर गया... बाद में तो बार-बार जाने लगा।

म.सा! बहुत बार तो रात के दो-दो बजे तक भी मैंने आचार्य भगवंत के साथ बातें की है। मार्गदर्शन पाया है... उन्होंने मुझे नवतत्त्व सिखाए। उनके और भी दूसरे अच्छे-अच्छे पुस्तक पढने को दिए। मैं जैसे-जैसे उनकी बाते सुनता गया, पुस्तक पढता गया, वैसे-वैसे मेरे मन का, हृदय का अंधेरा दूर होता गया... और एक दिन रोम-रोम से एक ही आवाज आई '**जैनधर्म ही सच्चा है**''...

मैंने पू.आचार्य भगवंत को मेरे गुरुदेव मान लिया। उन्होंने मात्र मेरा माँस ही नही छुडाया, मेरा मिथयात्व भी छुडवाया और मुझे सच्चा जैन बनाया।

और म.सा.! आपको कह दुं,'' मिथिलेश भाई की आवाज में फिर से आर्द्रता का अनुभव हुआ।''मैं' खुद को जैन ही मानता हुँ, और जब मरुँगा तब भी जैन बनके ही मरुँगा।''

मैं अचंभित हो गया। जन्म से ही जैन धर्म को पाए लाखो जैनो को अपने जैन धर्म के लिए खुमारी नही होती, पर शर्म आती है... जब कि ३१ वर्ष तक माँसाहार करनेवाले ये क्षत्रिय नेवी इंजीनियर जैनी बनके मरने में ही गौरव अनुभव करता है, खुमारी अनुभव करता है, आँसु बहाता है.. वाह रे वाह!

ध्यान रखना यह सामान्य सैनिक जैसा सैनिक नही...

भारत के मुख्य १२० युद्ध जहाजों में से एक युद्ध जहाज के मुख्य इंजीनियर है, और अभी M.B.A की भी पढाई कर रहे है। ३५-३६ साल में निवृति मिलने के बाद दूसरे कार्य करने के लिए उनको ये अभ्यास करना जरुरी लगा है।

ये हमारी दूसरी मुलाकात पूरी हुई।

****

फिर एक बार वे मंगल-बुधवार को मिलने आए ''आज कैसे? आज तो शनि-रविवार नही है?''

''मुझे काम से दिल्ली जाना है इसलीए अभी चार एक दिन यही पर हुँ।''

''तुम एक बात मानोगे? तुमने कहाँ कि तुमने नवतत्त्व का अभ्यास किया हुआ है, तो तुम रात को यहाँ एक दिन संघ के लोगो को एकाध घंटा समझाओगे?''

''समझा तो सकता हुँ, पर म.सा.! आप तो मेरे से १०० गुणा ज्यादा अच्छा समझा सकते हो, आप ही समझाओ ना?''

''तुम्हारी बात सच्ची, पर मुझसे ज्यादा तुम्हारे शब्दों की असर होगी, क्योंकि साधु नवतत्त्व समझाए, ये कोई आश्चर्य की बात नही है, इसीलिए तुम ही समझाओं?''

मैंने कहा और उन्होंने बात स्वीकारी।

उन तीन दिनों में उन्होंने डेढ-सौ आस-पास श्रावक-श्राविकाओं को नवतत्त्व का सामान्य से ज्ञान दिया।

आँखे खुली की खुली रह जाए ऐसी उनकी कुछ बाते देखते है....

१. बडे White Board पर नवतत्त्व सीखाना चालु करने से पहले ही बोर्ड पर उन्होने लिखा

''पू.आ.भ.श्री नवरत्नसागरसूरिजी को नमन...''

परम उपकारी गुरु को याद कर उन्होने अभ्यास चालु कराया। पू.आ.भ. का तो कालधर्म हो गया है, पर उनके हृदय मे तो वे आज भी वैसे के वैसे साक्षात जीवंत ही है। उन्होने सबसे पहला पाठ ये ही सीखाया कि '**उपकारी गुरु को कभी भी भूलना चाहिए।**'

२. इस पर्युषण में उन्होने आठो आठ दिन प्रतिक्रमण किए। अपने उपाश्रयो में पहले सात दिन जितने भाई होते है और अंतिम दिन जितने भाई होते है, उसके ऊपर से ही ख्याल आ जाता है कि *'लगभग 50% जितने श्रावक मात्र संवत्सरी का प्रतिक्रमण करते है, बाकी के सात दिन नही करते।'* ७ दिन लगभग ५०० पुरुष हो और संवत्सरी के दिन १००० हो तो समझ ही लेना पडता है कि *'500 जैनो ने 7 दिन प्रतिक्रमण नही किया है।'*

यह ही हालात अभी बहनो में भी है।

इस क्षत्रिय नेवी इंजीनियर ने आठो-आठ दिन चालु ड्युटी में प्रतिक्रमण किए, 'अभी आप ही कहो, हम किन्हे जैन गिने?'

किसीने वहाँ प्रश्न पूछा कि, ''आप प्रतिक्रमण करते हो?'' उसके जवाब में उन्होने कहा था ''पर्युषण के आठ दिन किए है।''

३. उन्हे पूछने में आया कि '**नेवी के ओफिसर बहुत रुपए बना लेते होंगे ना?**' अर्थात् भ्रष्टाचार तो बहुत चलता ही होगा ना?

तब वे बोले, ''मेरी जिन्दगी का एक अनुभव कहता हुँ। मैं

एक बार छुट्टी के दिनो में घर जा हा था। ट्रेन में मेरी सीट ढूँढ रहा था। तब हमारे नेवी के वाइस अेडमिरल को देखा (**वाइस अेडमिरल मतलब** 'नेवी में दूसरे नंबर की पोस्ट!' वे जहाँ-जहाँ युद्ध जहाज पर मुलाकात लेने जाते है, वहाँ आगे पीछे दस-बारह बुलेट चलती है, सेंकडो जवान उन्हे सलामी देते है...)। एक सामान्य आदमी की तरह उन्हें मुसाफरी करते देख मैं हैरान रह गया। पहलीबार तो मैं ऐसा ही समझा कि *'मुझसे भूल हुई है,'* इसलीए वापीस उस कम्पार्टमेन्ट की ओर मुडा। गौर से देखा तो यकीन हो गया ये तो सर ही है।

अंदर जाकर मैंने पूछा कि ''सर! आप यहाँ?''

'' हा! क्यों? मैं भारतीय ट्रेन में सफर नही कर सकता?'' वे मेरे प्रश्न का मर्म जान चुके थे, इसलिए उन्होंने हँसते-हँसते जवाब दिया।

''ऐसी बात नही है सर! आपकी पोस्ट के अनुसार आप पूरे भारत में स्पेश्यल हेलीकॉप्टर भी ले जा सकते हो। उसके बदले...''

''देखो मिथिलेश!'' वे खुमारी के साथ बोले ''मैं अभी **Duty** पर नही हुँ और राष्ट्र के काम से नही जा रहा। **M.P** में मेरे सासुजी का देहांत हो चुका है इसलिए जा रहा हुँ। तो मुझे भी एक सामान्य नागरीक की तरह ही मुसाफरी करनी पडेगी। सरकार मुझे जो सुविधाएँ देती है, उनका उपयोग मात्र सरकारी कामों के लिए ही किया जा सकता है, मेरे निजी कामों के लिए नही। इसलिए तुझे यह भी कह दुँ कि यह ट्रेन की टिकट भी मैंने ही निकाली है, ना कि किसी नेवी के ऑफिसर से मंगवाई है। मेरा काम मुझे ही करना है, सरकार के लोगो के पास मेरा काम क्यों करवाऊँ?''

वाइस अेडमिरल की ये बाते सुनकर मेरी आँखे हर्ष के आँसुओ से भर आई। भाईयो! जहाँ तक भारत के पास ऐसे

ईमानादार ऑफिसर होंगे, तब तक भारत को कोई आँच नही आएगी।''

मिथिलेशभाई का जवाब सुनकर सबको राष्ट्र के भक्तो के प्रति गौरव उत्पन्न हुआ। फिर भी एक होशियार आदमी ने वापस प्रश्न किया...

''फिर भी थोडा तो भ्रष्टाचार होगा ही ना?''

''हा! वो तो हर जगह रहने वाला ही है...''

''कितने %?''

''माफ करना! इस प्रश्न का जवाब मैं नही दुंगा...'' थोडी अनिच्छा के साथ मिथिलेश भाई बोले। ''मेरे राष्ट्र की नेवी के विषय में **Negative** बोलने का मुझे कोई हक नही और मेरी इच्छा भी नही है। मैं अच्छा देखना पसंद करता हुँ और आपको भी कहता हुँ कि 'अच्छा ही देखिए... बुरा दिख भी जाए तो दूर करने का प्रयत्न करना, पर उसका प्रचार मत करना...''

ये जवाब सुनकर हर कोई स्तब्ध हो गया...

उनके जवाब से आँखे खुली की खुली रह गई...

हम सब की हालात कैसी?

* संघ के लिए खराब बोलने को तैयार? **हा!**

* साधु-साध्वीजी की निंदा करने को तैयार? **हा!**

* संचालक, ट्रस्टीओ, आराधको, वहीवटकर्ताओ की भूलो को ढोल पीट-पीट कर चारो ओर फैलाने को तैयार? **हा!**

* किसी परिवार की आर्थिक तकलीफ, घर में बने हुए झगडे आदि के प्रसंग, संतानो के कोलेज वगैरह के गलत संबंधो को जानकर उन्हे छुपाने के बदले सबके कान में फुंक मार-मार कर उस परिवार

की इज्जत को धूल में मिलाने को तैयार? हा!

वे अजैन वाइस अेडमिरल कहाँ?

ये क्षत्रिय मिथिलेश भाई कहाँ?

और परमात्मा महावीर स्वामी द्वारा स्थापन किए हुए सर्वोत्तम जैनधर्म के सेवक हम सब कहा?

हमें हमारी जात पर शरम तक नही आती?

४. तीनों दिन रात को उन्होंने डेढ–डेढ घंटा खडे–खडे ही अभ्यास करवाया। नौ के नौ तत्त्व का नाम मुँह पर, उनके भेद भी मुँह पर, और इतना ही नही विस्तार से भी समझाया। वह भी बिना पुस्तक का उपयोग किए। उसमें भी वर्तमान विज्ञान के साथ नवतत्त्व की तुलना की। उनकी कला देखकर तो नवयुवान भी चक्कर खा गए, पूरे विश्व के इतिहास की और भूगोल की उनकी बाते सुनते–सुनते युवान आश्चर्य चकित हो गए। उनके शब्दों की असर एक साधु के शब्दो की असर से भी ज्यादा हुई।

हा! आखिर तो वे भी छद्मस्थ ही है ना! एक–दो गलतीयाँ तो उनसे भी हुई। वे ये मान बैठे थे कि *'प्रतिमा में अंजनशलाका होने के बाद उसमें जीव आ जाता है, यानि की प्रतिमा जीवद्रव्य है...,* 'पर अज्ञान के सामने बाकी का ज्ञान अत्यंत अनुमोदनीय था।

५. मिथिलेशभाई ने अपने जीवन के गुरु समर्पण का एक सुंदर प्रसंग बताया।

''मैं दिवाली के लिए M.P मनसौर गया हुआ था। मेरे Best Friend की शादी थी। शादी के दो दिन पहले ही चेन्नई से समाचार आए कि 'पू.आचार्य भ.आपको याद कर रहे है, सूरिमंत्र की पीठिका पूरी होने आई है।'

मैं अभी तो चेन्नई से घर आया था, फिर भी घर छोडा,

दिवाली छोडी, Best Friend की शादी छोडी और वापिस पहोंच गया चेन्नई। पू.आचार्य भगवतं ने मेरे जैसे इन्सान को याद किया, वह भी सूरिमंत्र पीठिका में से निकलने के अवसर पर। मैं मेरा परम अहोभाग्य मानता हुँ, उन्होने मुझे बहुत समय दिया है। रात को तीन से पाँच घण्टे उनके साथ सत्संग करने का अवसर मुझे मिला है। मैं मेरे खुद को धन्यातिधन्य मानता हुं...''

''वह मेरे लिए जिंदगी का सबसे आघातजनक दिन था...'' बोलते-बोलते मिथिलेशभाई रो पडे। ''मुझे समाचार मिले कि पू.आचाय भगवंत कालधर्म को प्राप्त हुए है।''

मैं दो मिनट फोन पकडकर खडा रहा। आँसु कब बहने लगे वह भी खबर नही पडी। मुझे लगा कि *'मैं अनाथ हो चुका हुँ, अभी मुझे ज्ञान कौन देगा? अभी किसके संदेश सुनकर खुश होऊंगा ?अभी किसके पास दौड़के पहोचुँगा ?'*

कुछ देर में स्वस्थ होकर निर्णय किया, *'चाहे जो हो जाए, मैं गुरुदेव के अग्नि संस्कार के अवसर पर तो पहुँच ही जाऊँगा ?'*

प्लेन की टिकीट तत्काल तो कैसे मिले? फिर भी पहचान लगाई, जमीन-आसमान एक कर दिया, अेरोड्राम पर पहुँचा, तभी चेन्नई से समाचार आए कि, ''आप यहाँ मत आइए, पू.आ.भ. को वहाँ लाया जा रहा है। भोपावर में अग्नि संस्कार होगा?''

और जब गुरुदेव का पार्थिव देह विमान में से बाहर निकला, तब कम से कम दस हजार लोग उनके दर्शन-वंदन के लिए हाजीर थे, उसमें एक नंबर मेरा भी था।

आँखो में आँसु के तोरण थे, दिल के तो टुकडे-टुकडे हो चुके थे। गौतमस्वामी ने वीर निवार्ण के समय कैसा विलप किया होगा, उसकी अनुभूति मुझे उस वक्त हुई।

७. ''शादी करने वाले हो?'' ये प्रश्न जब मैंने पूछा, तब उन्होंने

जवाब दिया कि ''कुछ पक्का नहीं है। भविष्य में जो होगा वह सही। नेवी में तो ३६ की आसपास की उम्र में निवृत्ति मिल जाती है, उसके बाद मुझे क्या करना? ये प्रश्न होने से M.B.A की पढाई कर रहा हुँ।''

मैंने तो उन्हे प्रेरणा की है कि 'आप शादी के विचार बदल दो। दीक्षा ना भी ले सको तो भी आपके लिए साफ-सीधा-सादा रास्ता ये है कि 'आप जैन-धर्म के सच्चे तत्त्वो का प्रचार करो, देश-विदेश में जाओ..'

अभी निवृत्त होने के बाद तो वे क्या करेंगे? वो तो पता नही..

८. मिथिलेशभाई के भाव : '**मैं जनम से जैन नहीं हुँ। पर जैन धर्म को समझकर विचारकर मैं अपना चुका हुँ।** मैं तो सबसे कहता हुँ कि आप केवल नाम के लिए किसी भी धर्म का स्वीकार ना करे, परंतु हर एक वस्तु को जानो, परखो....फिर स्वीकारो.'

उन्होंने सबको नौका के दृष्टांत द्वारा नवतत्त्व का सुन्दर बोध करवाया....

अंत में...

ये संपूर्ण सत्य घटना है, इसमें सारे के सारे नाम भी सत्य ही लिखे है, कुछ भी बदलाव नही किए गए है। यदि आप चाहते हो, तो उन्हे संपर्क कर सकते हो।

मिथिलेश भाईः 7358093250

हाँ! Duty पर होंगे, तो वे आपको मिलेंगे या नही? ये मुझे पता नही। शायद आप रुबरु मिलना चाहोगे, तो उनकी अनुकूलता हो तो आ भी सकते है, और अनुकूलता ना हो तो मना भी कर देंगे।

अगर युद्ध में उनके शरीर को हानि पहुँच जाए तो आपको

अलग दशा में भी मिल सकते है।

भविष्य में क्या होगा? ये तो पता नही, परंतु इतना तो पक्का पता है कि 'एक उत्तम आत्मा के संपर्क से आपकी आत्मा को शांति का अनुभव जरुर होगा।'

संसार के दुःखो से पीडित चारो ओर भीख माँगनेवाले बडे भिखारीओ को देखकर तत्त्वज्ञानी मिथिलेशभाई में विशिष्ट जैनत्व के दर्शन होते है। मन तो होता है कि सारे ही जैन ऐसे तत्त्वज्ञानी बने...

करोडो वंदन हो तपस्वी, संयमी, स्वर्गस्थ **आचार्यदेव नवरत्नसागरसूरिजी महाराज** को जिन्होंने पत्थर को पारसमणी बनाया, नास्तिक को आस्तिक बनाया, हेवान को इन्सान–महान बनाया....

****

श्रुत Messenger

पू.क्षमाश्रमण विजयजी के संयमजीवन की अनुमोदनार्थे

कथा Classic Series

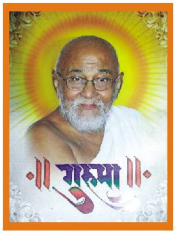

गुरु माँ

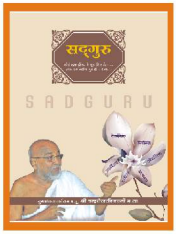

सद्गुरु

The Way of Legal Murder

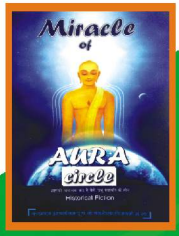

Miracle

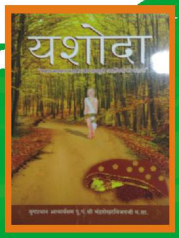

यशोदा

दक्षिण भारत

चेन्नई के चमकते सितारे

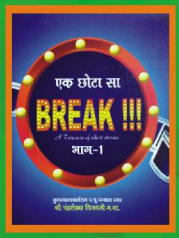

एक छोटा-सा ब्रेक

I.N.S AIRAVAT

भारत के नौकादल की एक TANK-CARRIER जहाज.... !

इस जहाज पर चीफ इंजीनियर की भूमिका को अदा करनेवाले,

***'यतो धर्मः, ततो जयः'* के सूत्र को खुद के जीवन में चरितार्थ करनेवाले**

देश के लिए खुद के जीवन को समर्पित करनेवाले,

हिंसा और अहिंसा दोनो एक साथ रह सकती इस हकीकत को बयान करनेवाले

एक नौजवान, ज्ञानवान नौकासैनिक की यह जीवन गाथा है,

***'व्यक्ति सिर्फ जन्म से जैन नहीं होता, कर्म से जैन होता है...'* यह सच्चाई मानने पर मजबूर कर दे वैसी पहेलीवाली यह जीवनगाथा है...**

***'देश रक्षा के साथ धर्मरक्षा'* के यज्ञ को खुद के जीवन में परोनेवाले उस नौसैनिक को करोड़ो सलाम... !**

आत्मकथा ADVENTURE SERIES

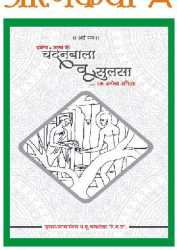

चंदनबाला व सुलसा

आत्मकथा - 1

आत्मकथा - 2

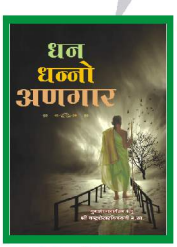

धन धन्नो अणगार